घरेलू हिंसा का सामाजिक आयाम तथा इसे दूर करने के सरकारी प्रयासों का अध्ययन

डॉ. नुदरत आजाद

वर्तमान समय में घरेलू हिंसा एक सामाजिक समस्या बनी हुई है, जो हर जगह व्याप्त है, पुरूषों के अधिकारों की अन्तहीन शक्ति के कारण हर युग, हर संस्कृति, हर जाति और धर्म में घरेलू हिंसा का दौर चला आ रहा है। घरेलू हिंसा पुरूष शक्ति का महिला की शारीरिक कमजोरी पर एक सीधा सा प्रक्षेपण है। इसे समाज का विडम्बना पूर्ण विरोधाभास ही कहा जा सकता है कि जिस समाज में आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक व राजनीतिक क्षेत्रों में महिलाओं की भूमिका तेजी से बढ़ती हुई बताई जाती है, उसी समाज में उसके प्रति किये जाने वाले अपराध, उसका तिरस्कार, शोषण व अपमान का स्तर भी बढ़ता ही जा रहा है। नारी के प्रति हिंसा का अविरल चक्र चलता ही जा रहा है। महिलाओं की स्थिति का मूल्यांकन उनकी सामाजिक रूपरेखा से प्रारंभ किया जाना चाहिए। सामाजिक संरचनाएँ, सांस्कृतिक प्रतिमान तथा मूल्य प्रणालियाँ पुरूषों और महिलाओं दोनों की व्यवहार संबंधी सामाजिक प्रत्याशाओं पर प्रभाव डालते हैं, और किसी हद तक समाज में महिलाओं की भूमिकाएँ और स्थिति निर्धारित करते है। इन संस्थाओं में से सबसे अधिक महत्वपूर्ण वंशक्रम प्रणालियाँ, परिवार और सगोत्रता, विवाह और धार्मिक परंपराएँ है। ये पुरूषों और महिलाओं को उनके अधिकारों और कर्तव्यों की धारणाओं के प्रति विचारधारा और नैतिक आधार प्रदान करते हैं। कोई भी कार्य जिसके परिवाद में लिंग पर आधारित हिंसा हो या सम्भावित हो, महिला को शारीरिक, कामुक या मानसिक क्षति या कष्ट का अनुभव होना तथा ऐसे कार्यो की धमकी, जोर जबरदस्ती या मनमाने तरीके से स्वतंत्रता छीनना, व्यक्तिगत जीवन में ऐसी घटना की बारम्बारता होना घरेलू हिंसा के अंतर्गत आते है।